वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 35 | शनिवार 3 जून 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

हर नए जिले में खुलेगा डिस्ट्रिक हॉस्पिटल

मेडिकल फैसेलिटी और इंफ्रास्ट्रक्चर डवलप करने के लिए नोडल ऑफिसर नियुक्त

जयपुर. शाबाश इंडिया। राज्य में 15 नए जिले बनने के बाद अब इनमें नए जिला अस्पताल (डिस्ट्रिक हॉस्पिटल) खोलने की तैयारी शुरू हो गई। इन जिलों में इसके लिए इंफ्रास्ट्रक्चर डवलप करने और प्रशासनिक ढ़ाचे को मजबूत करने नोडल ऑफिसर नियुक्त किए है। इन नोडल ऑफिसरों का काम यहां मेडिकल फैसेलिटी के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरत और उसे विकसित करने तथा जरूरी स्टाफ की नियुक्ति की कार्ययोजना तैयार करना रहेगा। अतिरिक्त मुख्य सचिव की ओर से जारी आदेशों के मुताबिक नए बने 15 जिलों में नोडल ऑफिसर के तौर पर उन जिलों के जिला सीएमएचओ को नियुक्त किया है। वहीं स्टेट लेवल पर इन नोडल ऑफिसर से कॉर्डिनेशन के लिए दो स्टेट नोडल ऑफिसर नियुक्त किए गए है। इसमें विजय सिंह और डॉ. सुनील परमार है। विजय सिंह का काम जिले के कलेक्टरों से कॉर्डिनेशन करते हुए हॉस्पिटल, सीएमएचओ, ड्रग स्टोर आदि के लिए जमीन आवंटन और अन्य प्रशासनिक स्तर पर काम करवाना रहेगा। जबकि डॉ. पारासर का काम मेडिकल हेल्थ डिपार्टमेंट की कार्ययोजनाओं को इन जिलों में क्रियान्वयन करवाकर उनकी मॉनिटरिंग करना रहेगा।

वैभव गहलोत का जन्मदिन 'सेवा दिवस' के रूप में मनाया, किया रक्तदान

जयपुर. कासं। राजस्थान नर्सेज एसोसिएशन के तत्वावधान में नर्सेज ने रक्तदान कर राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष वैभव गहलोत का जन्मदिवस 'सेवा दिवस' के रूप में मनाया। आयोजन समिति राजस्थान नर्सेज एसोसिएशन के चेयरमैन एवं आरएनसी के रजिस्ट्रार डॉ. शशिकान्त शर्मा ने बताया कि एसएमएस अस्पताल परिसर के जेएमए सभागार में इस मौके पर 7वां स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किया गया एवं पक्षियों के परिंडे बांधकर सेवा दिवस के रूप में आयोजन किया।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि वैभव गहलोत थे। वैभव गहलोत ने कहा कि रक्तदान एक पुनीत कार्य है और नर्सेज एसोसिएशन पीड़ित मानवों की सेवा के लिए हमेशा आगे रहता है। शशिकान्त शर्मा एवं मिथलेश टांक ने बताया कि शिविर में 108 यूनिट रक्तदान एकत्रित हुआ और 501 परिंडे बांधे गए। इस अवसर पर राजस्थान नर्सेज एसोसिएशन के अध्यक्ष प्यारेलाल चौधरी, महासंघ के अध्यक्ष राजेन्द्र राणा, टीएनएआई के सचिव डॉ. योगेश यादव, जावेद अख्तर नकवी, पवन मीणा आदि उपस्थित रहे।

पायलट समर्थक नेता और मंत्री उलझे

राजेंद्र यादव बोले- सबको साथ लेकर चलो; नेता का पलटवार- ज्ञान मत बांटिए

जयपुर. कासं

कांग्रेस की चुनावी रणनीति तय करने के लिए हुई बैठक में सह प्रभारी सचिव अमृता धवन के सामने गहलोत खेमे के मंत्री राजेंद्र यादव और पायलट समर्थक कांग्रेस नेता विद्याधर चौधरी ने एक दूसरे पर निशाना साधा। चौधरी ने बैठक में कांग्रेस को हरवाने वाले नेताओं को अहमियत देने पर सवाल उठाए। मंत्री यादव ने उन्हें सबको साथ लेकर चलने की नसीहत दी। इस पर चौधरी बिफर गए। मंत्री को जमकर खरी-खरी सुनाई। जयपुर ग्रामीण की इस बैठक में मंत्री यादव दो घंटे की देरी से पहुंचे थे। कांग्रेस नेता रेखा कटारिया ने बैठक में देरी पर सवाल उठाए थे। बैठक शुरू होने के बाद भीतरघात करने को लेकर पायलट समर्थक नेता ने सवाल उठाए। बैठक में विद्याधर चौधरी ने कहा- कांग्रेस में ऐसे भी लोग हैं, जो पार्टी को हराने वालों के थप्पी लगाते हैं कि बादशाह लगा रहे। मैं ऐसे लोगों को एक्सपोज करूंगा, मेरा उद्देश्य यही है। बाकी हारना जीतना चलता रहता है। मुझे हारने जीतने की परवाह नहीं है। न मेरे को एमएलए बनने का शौक है। ऐसा नहीं है कि एमएलए बनो, तभी मेरी ऊपर जाकर मोक्ष होगी। मुझे पार्टी प्लेटफार्म पर ऊपर वाला भी पूछेगा तो मैं कहूंगा। इसका अधिकार कोई छीन नहीं सकता। हराने वाला बादशाह कौन है, हमारे जीते हुए प्रतिनिधियों को बुलाकर पूछा जाए कि बताओ कांग्रेस क्यों हारती है? इस पर मंत्री यादव ने कहा- आप बड़े परिवार से हो, आप बड़ा मन रखकर सबको साथ लेकर चलिए। मंत्री की इस नसीहत पर विद्याधर चौधरी बिफर गए।

मुझे ज्ञान बांट रहे थे कि हरवाने वालों को साथ लेकर चलूं

बैठक के बाद मीडिया से बातचीत में विद्याधर चौधरी ने कहा- मंत्री राजेंद्र यादव कांग्रेस को हरवाने वाले लोगों की जगह मुझे ही ज्ञान बांट रहे थे। मुझे कहा कि आप बड़े हो और बड़ा मन करके ऐसे लोगों को साथ लेकर चलो, मतलब जिन्होंने मुझे हराया मैं उन्हें साथ लूं। पार्टी उम्मीदवार को हरवाने वालों को नसीहत देने की जगह मुझे ही ज्ञान बांटने का क्या मतलब? मंत्री को तो यह कहना चाहिए था कि कांग्रेस को हराने वालों को तो बाहर कीजिए।

टिकट किसको दें, यह क्षेत्र के जीते हुए पदाधिकारी तय करें

विद्याधर चौधरी ने कहा- हम गुणगान करें तब तो राजी, हकीकत कह दो तो नाराज। यह नहीं चल सकता। कांग्रेस को हरवाने वालों की पहचान करना बहुत जरूरी है। सह प्रभारी यह देखें कि कांग्रेस को हरवाने वाली ताकतें कौन हैं? ऐसी ताकतों को पहचान करके कांग्रेस से बाहर का रास्ता दिखाया जाना चाहिए। टिकट किसको दें, यह क्षेत्र के जीते हुए पदाधिकारी तय करें। क्षेत्र में प्रधान,जिला परिषद मेंबर, पंचायत समिति मेंबर, नगरपालिका मेंबर और जीते हुए प्रतिनिधियों से फीडबैक लिया जाए कि आपके यहां विधानसभा में कौन जीत सकता है? उसको टिकट दें, उसमें अगर मेरे खिलाफ भी फीडबैक जाता है तो मैं चुनाव लड़ने में इच्छुक नहीं हूं। मेरे खिलाफ भी पब्लिक यह कहती है कि वोट नहीं देंगे तो टिकट काट लीजिए।

ऐतिहासिक वर्कशॉप की हुई बेहद "यादगार शुरूआत"

जयपुर. शाबाश इंडिया

समाज श्रेष्ठी नंदकिशोर प्रमोद पहाड़िया के सहयोग से अरिहन्त नाट्य संस्था द्वारा ए. आर.एल प्रजेंट्स पहल थिएटर एन्ड पर्सनल्टी डेवलपमेंट वर्कशॉप का शुभारंभ सभी सेन्टर पर बड़े उत्साह के साथ हुआ। सर्व प्रथम श्री दिगम्बर जैन मंदिर चंद्र प्रभ जी दुर्गापुरा में कार्यशाला की शुरूआत पुण्यार्जक ड़ॉ. एम.एल.जैन व डॉ. शान्ति जी मणि, कार्यक्रम समन्वयक महासमिति राजस्थान अंचल की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी बाकलीवाल,मंत्री राजेन्द्र बिलाला त्रिशला संभाग अध्यक्षा श्रीमती चन्दा सेठी द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया उसके पश्चात श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर थड़ी मार्केट पर कार्यशाला का उदघाटन किया। पुण्यार्जक श्रीमती आशा राजेन्द्र शाह व पार्श्वनाथ महिला सम्भाग की अध्यक्षा श्रीमती नीता व श्रीमती भवंरी देवी एवं समस्त प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति द्वारा दीप प्रज्वलित किया गया इसके अतिरिक्त श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर विवेक विहार, ए-13 महेश नगर, बीकन पब्लिक स्कूल मुरलीपुरा, श्री चन्द्र प्रभु दिगम्बर जैन मंदिर मालवीय नगर सेक्टर 10 और श्री दिगम्बर जैन मंदिर मंगल विहार, धूप छाँव

फाउन्डेशन वैशाली नगर इन सभी सेन्टर पर विधिवत रूप से कार्यशाला शुरू की गई। उसके बाद सभी आठ सेंटर्स पे बच्चों को खेल ही खेल में लगभग 23 सब्जेक्ट्स सिखाने की प्रक्रिया शुरू हो गयी जिसमें 250 बच्चों ने हिस्सा लिया व सभी जगहों पर बच्चों ने बड़े जोश और उमंग के साथ उत्साह दिखाया। आयोजक व कार्यशाला निर्देशक अजय जैन मोहनबाड़ी ने बताया कि इन सभी स्थानों पर आठ कुशल इंस्ट्रक्टर्स लेखक निर्देशक तपन भट्ट,विजय बंजारा, ऋचा पालीवाल,चित्रांश माथुर,सुदर्शनी माथुर, मोनिका, होसाना, कमलेश, कमल चंदानी,शाहरुख खान द्वारा बताई गई प्रैक्टिकल एक्सरसाइज को हंसते खेलते सीखा और किया। पहले दिन आने वाले बच्चों और उनके पेरेंट्स को इन एक्सरसाइज और खेल से बहुत कुछ सीखने को मिला और उन्होंने कहा कि एक महीने बाद तो हम सभी मे सच मे बहुत फर्क नजर आने वाला है। उन्होंने कहा कि हम एक दो दिन में अपने आसपास रहने वाले और बच्चों को मोटिवेट करेंगे ताकि वो भी इन कार्यशालाओं में आएं और अपने व्यक्तित्व विकास के साथ, ड्रामा, डांस, आर्ट एंड क्राफ्ट, पेंटिंग सहित लगभग 23 विषयों से अपने आप को निखार सके और उसे मंच पर प्रस्तुत कर सकें। गौर तलब है कि 1 जून से 30 जून तक चलने वाली इन कार्यशालाओं में प्रत्येक सेंटर के बच्चों से एक श्योशल ड्रामा, जो कि बच्चों से ही रिलेटेड सब्जेक्ट पर होगा, तैयार किया जाएगा। 28, 29 और 30 जून को सभी 9 सेंटर्स के बच्चों द्वारा तैयार नाटकों का महावीर स्कूल के ऑडिटोरियम में मंचन किया जाएगा। साथ ही बच्चों द्वारा इस एक महीने में तैयार किये गए डांस की प्रस्तुति भी दी जाएगी। इस बीच पूरे महीने सीखे गए पेंटिंग, क्राफ्ट, आर्ट और मास्क मेकिंग से संबंधित जो भी क्रिएशन बच्चों द्वारा किया जाएगा उनकी एक विशाल एक्जीबिशन भी महावीर स्कूल में लगाई जाएगी।

जिनेंद्र पूजा विज्ञान

शाबाश इंडिया

रमेश गंगवाल
मन. 1127, मनिहारों का रास्ता,
किशनपोल बाजार जयपुर , राजस्थान
9414409133 , 8302440084

हमारा जीवन मंदिर की तरह से है। आत्मा की वीतराग अवस्था में ही देवत्व समाहित है । हम सभी में वह देवत्व शक्ति विद्यमान हैं, इसी देवत्व शक्ति से प्रेरित होकर, और उस शक्ति को अपने भीतर प्रकट कर लें, इसलिए हमने यह मंदिर स्थापित किए हैं। और उस मंदिर में अपने आदर्श वीतराग प्रभु ,अरहंत और सिद्ध परमात्मा को विराजित किया है। रहने के लिए घर तो पशु पक्षी भी बना लेते हैं । लेकिन मंदिर का निर्माण तो सिर्फ और सिर्फ मनुष्य ही कर पाता है मंदिर का विज्ञान अद्भुत है, मंदिर की कला अद्भुत है। हम अगर भली-भांति समझें तो मंदिर का हर स्थान चाहे वह गुम्बज हो ,चाहे वह छोटे-छोटे कलात्मक रूप से बने हुए, खिड़की- दरवाजे हों । मंदिर के प्रवेश द्वार पर लगे हुए विशाल घंटे हो, या भगवान के सम्मुख अर्पण किए जाने वाले धूप और अष्टद्रव्य हों, सबका संबंध वैज्ञानिक रूप से कलात्मकता की सूझबूझ है । ओंकार की प्रतिध्वनि एवं घंटे की टंकार जब गुंबद से टकराकर गूंजती है तो घंटे का धीमा धीमा नाद मन को प्रफुल्लित कर देता है। भगवान का अभिषेक और पूजा के भावों में वातावरण को पवित्र बनाने की सामर्थ्य विद्यमान है। अब मंदिर में प्रवेश पाकर,अपने आत्म प्रवेश का द्वार खुल जाए । किस तरह से खुल जाए यह मानव की सूझबूझ है। प्रातः स्नान करने के पश्चात साफ धुले हुए वस्त्र पहनकर पवित्रता, सादगी और सरलता से हमें जिनालय जाना चाहिए। मंदिर पहुंचने से पहले कोई और कार्य हम ना करें, हम निष्काम होने के लिए निकले हैं , तो सब कामों से मुक्त होना अति आवश्यक है। सारा मार्ग इस भावना के साथ तय करें कि हम भगवान के दर्शन करने जा रहे हैं। अपना सब कुछ समर्पित करने जा रहे हैं। अपने हाथ में श्रेष्ठ चावल होने चाहिए, और गहरे समर्पण के भाव होने चाहिए, मंदिर पहुंचकर हम पहले अपने पैर धो लें, मन में किसी प्रकार का बोझ ना रखें ,और अनुभव करें भगवान की दिव्य वाणी से व्याप्त भगवान के समव शरण में हम प्रवेश कर रहे हैं। मन्दिर जी में घंटे की धीमी धीमी ध्वनि सुनाई देती है, हमारा मन उस ध्वनि को सुनकर पवित्र शांत हो जाता है तब मन प्राण से एक ही आवाज गूंजनी चाहिए- ओम् जय जय जय, नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु..... भगवान को सम्मुख पाकर श्रद्धा से मस्तक झुका लेना चाहिए। जमीन से माथा टेक कर हम पहला प्रणाम निवेदित करें । फिर संभल कर खड़े हो जाएं और भगवान जिनेंद्र की वीतराग छवि को अपलक देखते देखते अपने अंतस की वीणा पर जो भी स्वर मुखरित हो वह वाणी से अपने आप भगवान का स्तवन करते हुए निकले। पश्चात पुनः भगवान के श्री चरणो में माथा टेककर अहम् को विसर्जित करने के लिए दूसरा प्रणाम निवेदित करें । और अपने साथ लाए हुए चावलों से भरी अंजलि खोलकर अपना सर्वस्व समर्पित कर दें । यह चावल इस बात के प्रतीक हैं कि हमारा जीवन भी इन्हीं की तरह से उज्जवल अखंड और आवरण से रहित हो जाए। हम जन्म मरण से मुक्त हो सकें। पश्चात उन्हें खड़े होकर देह के प्रति अपना ममत्व त्याग कर हम नो बार महामंत्र का वाचन करें और भगवान के श्री चरणों में तीसरा प्रणाम निवेदित करें। दर्शन की यह समग्र प्रक्रिया भावात्मक हो और पश्चात सभी वेदिकाओं पर ऐसे ही प्रणाम निवेदित करते हुए अपनी भाव दशा को निर्मल बनाएं। भगवान की भव्य प्रतिमा को निमित्त बनाकर उनके जलाभिषेक से स्वयं को परम पद में अभिषिक्त करें। भगवान की पूजा जिन - अभिषेक पूर्वक ही संपन्न होती है ऐसा हमारे पूर्व आचार्यों द्वारा श्रावकों को उपदेश किया गया है। पूजा के प्रारंभ में किन्ही भी तीर्थंकर देव की प्रतिमा के समक्ष पुष्पों के द्वारा अथवा पीले चावलों के द्वारा भगवान के स्वरूप को अपनी दृष्टि के समक्ष लाने का प्रयास करना ही आह्वानन है। उनके स्वरूप को हृदय में विराजमान करना स्थापना है, और हृदय में विराजे भगवान के स्वरूप के साथ एकाकार होना सन्निधि करण है। द्रव्य पूजा का अर्थ सिर्फ इतना ही नहीं है कि अष्टद्रव्य अर्पित कर दिए और ना ही भाव पूजा का यह अर्थ है कि पुस्तक में लिखी पूजा को पढ़ लिया । पूजा तो गहरी आत्मीयता के क्षण हैं । वीतरागता से अनुराग और गहरी तल्लीनता के साथ श्रेष्ठ द्रव्यों को समर्पित करना एवं अपने अहंकार और ममत्व भाव को विसर्जित करते जाना ही सच्ची पूजा है। हमारे साधु जन तो निष्परिग्रही हैं इसलिए उनके द्वारा की जाने वाली पूजा अथवा भक्ति में द्रव्य का आलम्बन नहीं होता लेकिन परिग्रही गृहस्थ के लिए परिग्रह के प्रति ममत्व भाव के परित्याग के प्रतीक रूप श्रेष्ठ अष्टद्रव्य का विसर्जन अनिवार्य होता है। पूजा हमारी आंतरिक पवित्रता के लिए है। इसलिए पूजा के क्षणों में और पूजा के उपरांत सारे दिन पवित्रता बनी रहे , ऐसी हमारी कोशिश होनी चाहिए । पूजा और अभिषेक जिनत्व के अत्यंत सामीप्य का एक अवसर है। अतः निरन्तर इंद्रिय और मन को जीतने का प्रयास करना और जिनत्व के समीप पहुंचना हमारा कर्तव्य है। आचार्य समन्त भद्र स्वामी भगवंत कहते हैं पूजा भगवान की सेवा है भगवान की वैया वृत्ति है जिसका लक्ष्य आत्म प्राप्ति है। आचार्य रविषेण भगवंत पद्मपुराण जी में कहते हैं पूजा, अतिथि का स्वागत है और उन्होंने इसे अतिथिसंविभाग के अंतर्गत रखा है। पूजा ,गहरी तल्लीनता और आत्म उपलब्धि में कारण बनती है इसलिए उपासकाध्ययन में आचार्य श्री सोमदेव स्वामी ने इसे सामायिक व्रत में रखा है। सामायिक एक चरित्र है जो मुनियों में हमेशा रहता है, चरित्र ही निश्चय से धर्म है, धर्म मोक्ष का कारण है अतः पूजा भी मोक्ष का कारण है। पूजा ,ध्यान भी है ,तभी तो भाव संग्रह में आचार्य भगवान भावसेनाचार्य ने इसे पदस्थ ध्यान में शामिल किया है ध्यान एक तप है जिससे कर्मों की निर्जरा होती है कर्म निर्जरा पूर्वक ही मोक्ष होता है, अतः पूजा मोक्ष का साधन है। पूजा -आत्मान्वेषण की प्रक्रिया है इसे स्वाध्याय भी कहा गया है जिन पूजा से लाभान्वित होने में हमें कसर नहीं रखनी चाहिए ,पूरा लाभ लेने की भरसक कोशिश करनी चाहिए । पूजा के आठ द्रव्य अहम् के विसर्जन और हमारे आत्म विकास की भावना के प्रतीक हैं।

-निरंतर

स्वास्थ्य क्षेत्र में भ्रष्टाचार पर चर्चा

जयपुर। सिडार्ट एवं यूनाइटेड नेशन ग्लोबल कनेक्ट के संयुक्त तत्वावधान में स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करने वाली विभिन्न संस्थाएं ने स्वास्थ्य क्षेत्र में भ्रष्टाचार पर आयोजित हुई एक कार्यशाला में भाग लिया और उसमें सुधार के लिए सरकारी स्तर , गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधियों से विस्तृत चर्चा की कार्यशाला की अध्यक्षता रत्नेश यूएनजीसी के नेशनल लेवल हेड (ED, UN-GCNI) द्वारा की गई।कार्यक्रम का आयोजन डॉ. प्रमिला संजय के मार्गदर्शन में सिडार्ट टीम द्वारा किया गया एवं यूएनजीसी एन आई के उपनिदेशक डॉक्टर सोमनाथ सिंह एवं सीरत का इसमें सहयोग रहा। कार्यक्रम को प्रारंभ करते हुए डॉ. प्रमिला संजय ने कार्यशाला के विषय के बारे में विस्तृत रुप से बताया एवं सभी प्रतिभागियों का संक्षिप्त परिचय दिया और सभी उपस्थित विषय विशेषज्ञों को सभागार में आने के लिए तथा कार्यशाला में भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया और उनका अभिनंदन किया।

श्री पद्मावती जैन बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय का बोर्ड का शत प्रतिशत परिणाम

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री महावीर जैन शिक्षा परिषद द्वारा संचालित श्री पद्मावती जैन बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय घी वालो का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर का सत्र 2022-23 बोर्ड कक्षाओं का परिणाम शत-प्रतिशत रहा। विद्यालय की कार्यवाहक प्रधानाचार्या श्रीमती अंजू शर्मा व प्रबन्ध समिति के संयोजक राजेंद्र बिलाला ने छात्र-छात्राओं व सभी शिक्षिकाओं को इस अभूतपूर्व सफलता पर तथा उनकी कड़ी मेहनत पर बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित की ।

वेद ज्ञान

विद्या की साधना से मिलती है लेखन की प्रेरणा

उपलब्धि योग्यता से होती है। योग्य का अर्थ विशिष्ट पात्रता से है। लीक से हटकर सारस्वत साधना करने में पूरा जीवन समर्पित करना पड़ता है। समाज के उत्कर्ष के लिए निरंतर खोज की आवश्यकता रहती है। विद्या की साधना से स्वाध्याय और लेखन की प्रेरणा मिलती है। विद्या से विद्वता आती है। विद्वता लाभ-हानि के गुणा-भाग से ऊपर का तत्व है। विद्वता का मानक मानवता, विनम्रता, संवेदना और चरित्र है। इसमें दोहरी चीज नहीं चलती। विद्वान पूर्वाग्रह और आत्मकेंद्रित संकीर्णता से भागते हैं। कुछ लोग वितंडावाद खड़ा करके विद्वता पर प्रश्न करते हैं। योग्यता की सार्थकता आगे बढ़ते होनहारों को पिछाड़ने में कदापि नहीं है। यह प्रेरणा का मंत्र बनकर गुनगुनाती है। केवल लिखने से कोई विद्वान नहीं बन जाता। जीवन और मंच की विद्वता में बड़ा अंतर है। अनुभवजन्य विद्वता गपबाजी से नहीं आती। अभाव से जूझते विद्वानों की तुलना धनवानों से नहीं की जाती। उच्च शिक्षा संस्थानों में पदों पर बैठे कुछ लोग विद्वानों की श्रेणी में स्वयं आ जाते हैं। मसिजीवी जब संघर्ष से आगे बढ़ते हैं, तो पदनामधारी घृणा करते हैं। विद्वता के आचरण और पहचान का संकट बढ़ा है। समाज को जोड़े, बचाने और आगे ले जाने की ललक रखने वाले समर्पित चिंतक दुर्लभ हैं। वाणी, ईमानदारी, सत्य और न्याय के अर्थ का अनर्थ करना कुशलता नहीं है। विद्या का दान सर्वश्रेष्ठ तपस्या है, जो पारस की भांति लोहे को सोना बनाता है। सकारात्मक प्रयास में चंदन का घर्षण आग उत्पन्न करता है। पारदर्शिता मूल्यांकन का आधार है। जिससे मिलने पर गुण या प्रेरणा नहीं मिलती उससे दूर रहना ही ठीक है। शिव से वरदान पाने पर भस्मासुर ने शिव पर ही परीक्षण करना चाहा तो उसका विनाश हो गया। इसलिए विद्या का सदुपयोग ही सार्थक है। सभी बादल जल नहीं बरसाते। वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु ने पौधों पर संवेदनशीलता पर शोध-प्रयोग किया। विद्वता के लिए श्रेष्ठ कार्य करने में नई राह बनानी पड़ती है। सरस्वती के पास जाने में लक्ष्मी संकोच करती हैं, पर संकोच कम करते ही अपना निवास बना लेती हैं। सरस्वती की अखंड आराधना के बिना विद्वता आना कठिन है। सरस्वती जिसे तिलक कर देती हैं उसके हाथ स्वयं लिखने लगते हैं। करुणा का लोक मंगल विद्वता का प्राणतत्व है।

संपादकीय

संवाद के जरिए एक संतुलित समाधान की जरूरत

फिलहाल मणिपुर में जो हालात हैं, उसमें सुधार के लिए रास्ता भी आखिर यही था कि पहले अलग-अलग विरोधी पक्षों के बीच संवाद कायम किया जाए और कम से कम तात्कालिक तौर पर शांति को प्राथमिकता में रखा जाए। इसके बाद स्वाभाविक ही इसकी अहमियत स्थापित होगी और दीर्घकालिक या स्थायी महत्त्व का हल भी निकलेगा। इस लिहाज से देखें तो गुरुवार को केंद्रीय गृह मंत्री की पहल का अपना महत्त्व है। राज्य के विभिन्न हिंसाग्रस्त इलाकों का दौरा करने और राजनीतिक दलों और सामाजिक संगठनों के साथ बातचीत के बाद उन्होंने राज्य के राज्यपाल की अध्यक्षता में एक शांति समिति के गठन और हिंसा में मारे गए लोगों के परिजनों लिए मुआवजे के अलावा राहत और पुनर्वास पैकेज की घोषणा की। साथ ही वहां हुई जातीय हिंसा की जांच के लिए उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश स्तर के सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक न्यायिक आयोग का

गठन भी किया जाएगा। दरअसल, राज्य में हालात जिस स्तर तक जटिल हो चुके हैं, उसमें किसी भी पक्ष की ओर से और अधिक हिंसा परिस्थितियों को ज्यादा मुश्किल बनाएगी और इसका खमियाजा सभी पक्षों को भुगतना पड़ेगा। इसलिए शांति की राह की ओर बढ़ना ही सभी पक्षों के लिए जरूरी है। इसके अलावा, गृह मंत्री का यह बयान भी संभवतः उग्र हुए पक्षों को शांत होने और हल की ओर बढ़ने के बारे में सोचने की जगह बनाएगा कि मणिपुर उच्च न्यायालय की ओर से जल्दबाजी में लिए गए फैसले की वजह से दो गुटों के बीच हिंसा हुई; लोग अफवाहों पर ध्यान न दें और शांति बनाए रखें। हालांकि फिलहाल हिंसा में शामिल समूहों की गतिविधियों पर नजर रखने की जरूरत है, क्योंकि कई बार शांति की सही दिशा को हिंसा या अराजकता की कोई छोटी घटना भी भटका दे सकती है। यों इससे पहले केंद्र सरकार की ओर से संकटग्रस्त मणिपुर में स्थायी शांति के लिए संघर्षरत मैतेई और कुकी समुदायों के बीच न्यूनतम सहमति की जमीन तैयार करने के लिए त्रिआयामी दृष्टिकोण पर काम करने की खबर आ चुकी थी। जाहिर है, मणिपुर में मैतेई समुदाय को जनजातीय दर्जे से संबंधित जो विवाद खड़ा हुआ है, उसका हल हिंसा और अराजकता से नहीं निकल सकता। बल्कि इससे नई ऐसी परिस्थितियां पैदा होंगी, जिसमें बहुत सारे लोग कानूनी कार्रवाई की चपेट में आएंगे। दरअसल, विवाद की शुरूआत के बाद इसके समाधान को लेकर सरकार की ओर से उदासीनता का जो रुख रहा, उसके मद्देनजर कुछ स्थानीय जनजातीय समुदायों को यह भरोसा नहीं हो पा रहा कि उनके हितों की रक्षा की जाएगी। यों वहां के पहाड़ी इलाकों से कथित बाहरी लोगों को हटाने के सवाल पर पहले ही लोगों में रोष था, लेकिन उसके बाद मैतेई समुदाय के लोगों को जनजाति का दर्जा देने के मसले पर उच्च न्यायालय के रुख के बाद शेष जनजातीय समुदायों के बीच नाराजगी काफी बढ़ गई और उससे उपजे विरोध ने हिंसा का रास्ता भी अख्तियार कर लिया। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

सावधानी जरूरी

अफसोस की बात यह है कि इस तरह के लगातार हादसों के बावजूद न तो सड़कों पर वाहन चलाने वाले लोग सावधानी बरतने को तैयार दिखते हैं, न ही संबंधित महकमे बचाव के पूर्व इंतजामों को लेकर गंभीर होते हैं। नतीजतन, एक के बाद एक दुर्घटनाएं सामने आती रहती हैं और उनमें नाहक ही लोगों की जान जाती रहती है। गौरतलब है कि मंगलवार को जम्मू में वैष्णो देवी के दर्शन के बाद लोगों को लेकर कटरा से अमृतसर जा रही एक बस रास्ते में बने एक पुल से नीचे खाई में गिर गई। इस हादसे में कम से कम दस लोगों की मौत हो गई और छियासठ अन्य घायल हो गए। हताहत यात्री बिहार के लखीसराय जिले से थे और बच्चे के एक धार्मिक अनुष्ठान के लिए गए थे। यानी किसी धार्मिक यात्रा के बाद खुशी की इच्छा में तीर्थयात्रा पर गए लोग वाहन चलाने में मामूली चूक की वजह से एक त्रासदी का शिकार हो गए। दस दिन के भीतर हुई इस तरह की यह दूसरी घटना है। हालांकि पहाड़ी इलाकों में आए दिन ऐसे हादसे होते रहते हैं। विडंबना यह है कि पहाड़ी क्षेत्र में एक ही तरह से होने वाली दुर्घटना के उदाहरण बार-बार सामने आने के बावजूद उन इलाकों में वाहन चलाने वाले लोग कुछ वैसी बातों को लेकर सावधान रहने में चूक कर जाते हैं, जो दिखने में बिल्कुल छोटी होती हैं, लेकिन उसकी वजह से ही वाहन में सवार सभी लोगों की जान पर आफत आ सकती है। जम्मू में जो बस हादसे का शिकार हुई, वह दरअसल पुल से नीचे खाई में गिर गई। यानी किसी तकनीकी गड़बड़ी या फिर चालक की लापरवाही या गलती की वजह से बस नियंत्रण से बाहर हो गई और पुल का घेरा तोड़ती नीचे जा गिरी। लेकिन यह भी सच है कि पुल पर बना घेरा इतना मजबूत नहीं था कि किसी अनियंत्रित वाहन को नीचे गिरने से रोक सके। दूसरे, पहाड़ी इलाकों में वाहन चलाना सामान्य मैदानी इलाकों के मुकाबले ज्यादा जोखिम का काम होता है और उसमें चालकों को अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत होती है। ऐसे क्षेत्रों में हादसे के बाद की एक बड़ी समस्या यह होती है कि अगर कोई वाहन खाई में गिर जाता है तो वहां तक पहुंचने में आने वाली मुश्किल की वजह से उसमें फंसे लोगों के बचाव कार्य में होने वाली देरी के चलते भी कई लोगों की जान नहीं बचाई जा पाती। पहाड़ में बनी सड़कों पर वाहन चलाने की जटिलताओं के बीच ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए जो उपाय किए जाने चाहिए, कई बार उन्हें लेकर भी संबंधित महकमे कोताही बरतते हैं। मसलन, पहाड़ी रास्तों पर ऐसे मोड़ अक्सर सामने आते हैं, जहां सामने से आ रहा वाहन दिखाई नहीं दे पाता। सड़क के किनारे एक तरफ पहाड़ होते हैं, तो दूसरी ओर गहरी खाई। बेहद मामूली चूक भी ऐसे हादसे का कारण बन जाती है, जिसमें किसी का जीवन बचने की उम्मीद नहीं बचती। इसके मद्देनजर ऐसे इलाकों में सड़क किनारे पैराफिट या फिर क्रैश बैरियर लगाए जाते हैं, ताकि अगर कोई वाहन संतुलन खो दे तो पैराफिट या क्रैश बैरियर से टकरा कर किसी तरह खाई में गिरने से बच जाए। सिर्फ इतने भर से कई लोगों की जिंदगी बचाई जा सकती है। लेकिन कई बार सड़कों पर होने वाले हादसों से बचाव के इंतजामों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता। ऐसी स्थिति में किसी चालक की कोताही या वाहन में अचानक आई तकनीकी गड़बड़ी खमियाजा उसमें सवार लोगों को भुगतना पड़ता है।

समय का सदुपयोग करने वाला ही सच्चा सन्त होता है: प्रवर्तक सुकन मुनि

जन्म का अर्थ है भवभ्रमण जारी: उपप्रवर्तक अमृत मुनि

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया।

सारण। महासती श्री पुष्पवती गौशाला में श्रमण संघीय प्रवर्तक मरुधरा भूषण शासन गौरव पूज्य गुरुदेव श्री सुकनमुनि जी म.सा, तपस्वीरत्न ज्योतिष सम्राट उपप्रवर्तक गुरुदेव श्री अमृतमुनि जी म सा, युवा प्रणेता महेश मुनि जी म सा, बालयोगी अखिलेश मुनि जी म सा, डॉ वरुण मुनि जी म सा आदि ठाणा 5 के पावन सान्निध्य में सारण मे उपप्रवर्तक अमृत मुनि जी म सा के 63 वें जन्म दिवस पर आयोजित धर्म सभा में प्रवर्तक सुकन मुनि ने कहा कि जीवन बहुत छोटा है। अगर उसमें आप सौदेबाजी करने की कोशिश करेंगे तो इससे पहले कि आपको कुछ पता चले, आपका जीवन समाप्त हो जाएगा। जन्मदिन यही याद दिलाते हैं कि जीवन खत्म हो रहा है। यह ऐसी बोरी है, जिसमें एक छेद है। इससे पहले कि आपको कुछ पता चले, बोरी खाली होकर लुढक जाएगी। जीवन हर समय थोड़ा-थोड़ा निकलता जा रहा है। अगर हम जागरूक नहीं हुए, अगर हम अपनी अंदरूनी खुशहाली पर अपना सारा ध्यान न लगाएं, तो मृत्यु का पल एक पछतावा होगा। आपको पता नहीं होता कि आप कितने जन्मदिन देख पाएंगे, इसलिए सचेत होकर आत्म साधक बने। मुझे प्रसन्नता है कि उपप्रवर्तक अमृत मुनि का 63 वाँ जन्मदिन मनाया जा रहा है, मैं शुभाशीष देता हूँ और दीघार्यु की मंगल कामना करता हूँ। उपप्रवर्तक अमृत मुनि ने कहा कि जन्मदिन मनाना मेरा तभी सार्थक होगा जब आप सब कुछ ना कुछ त्याग करके जाएंगे। जन्मदिन भोग विलासिता में डूबने के लिए नही अपितु आतम जागृति के लिए आता है और जन्मदिन हमें कहता है कि हे मनुष्य जाग जा ! तू मौत के करीब पहुंच रहा है। अमृतमुनि जी म सा ने जन्मदिन पर कहा कि जन्मदिन मनाना तभी सार्थक होगा जब आप अपने जीवन की दुर्व्यसन्ता मुझे भेंट करेंगे। जन्म का मतलब होता है कि अब भी कई जन्म लेने हैं। मैं तो अपने गुरु से ये आशीष मांगता हूँ कि ऐसा आशीर्वाद दीजिये की जन्म मरण के चक्र को तोड़कर सिद्ध पथ का राही बनूँ।

श्री कृष्ण पांडव पुराण महाकाव्य का विमोचन: प्रवचन के दौरान उपप्रवर्तक अमृत मुनि जी म सा की चिरप्रतीक्षित 53 वीं पुस्तक श्री कृष्ण पांडव पुराण (श्री अमृत जैन महाभारत कथा) भाग प्रथम एवं द्वितीय खण्ड का विमोचन हुआ। प्रथम खण्ड का विमोचन अशोक कुमार, कमलेश, आशीष लुंकड़ चेन्नई वालों ने किया वही द्वितीय खण्ड का विमोचन महावीर भलगट रत्नागिरी ने किया। ग्रन्थ का लोकार्पण होने के पश्चात प्रवर्तक श्री एवं उपप्रवर्तक श्री को ग्रन्थ समर्पित किया गया। डॉ वरुण मुनि ने ग्रन्थ का परिचय देते हुए कहा कि ये 1250 पृष्ट में गद्य पद्य में लिखित श्री कृष्ण पांडव पुराण हिंदी काव्य साहित्य में स्वर्णाक्षरों से अंकित होने जा रहा है। इस ग्रन्थ में भगवान श्री नेमिनाथ, श्री कृष्ण तथा पांडवों का अथ से इति तक इतिहास वर्णित है। वर्तमान में जैन परम्परा में ऐसा विशाल ग्रन्थ का सृजन निश्चितत: लेखक के वृहद परिश्रम को दर्शाता है।

आचार्य श्री विवेकसागर जी महाराज ने कहा...

प्राणी को सुख-दुख अपने पुण्य पाप व कर्म से मिलता है

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया

परम पूज्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री 108 विवेकसागर जी महाराज ने श्री नागोरी दिगंबर जैन मंदिर कुचामन सिटी में धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि अपने पाप पुण्य से सुख-दुख का एहसास संघ जगत के प्राणी मात्र को सुख दुख की सामग्री अपने पुण्य व पाप कर्म के कारण ही प्राप्त करते हैं। सुख की प्राप्ति पुण्य से और दुख की प्राप्ति पापों से होती है। पूरे दिन परमात्म भक्ति, स्नान पूजा, प्रवचन, प्रतिक्रमण आदि करने से, तीर्थ यात्रा का आयोजन करने से श्रावक को परमात्मा एवं चतुर्विध ससंघ की भक्ति करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। मन में शुभ भावों से मन, पुण्य, वचन के द्वारा अन्य को आत्महित की बातें तथा अच्छी सलाह देने से वचन पुण्य व काया के साथ सेवा करते हुए अपनी शक्ति का सदुपयोग करने से काया का पुण्य होता है। पवित्र आत्माओं को नमस्कार करने से नमस्कार पुण्य का बंध होता है। उन्होंने कहा कि जगत में सभी आत्माओं का आत्म कल्याण कभी किसी भी काल में संभव नहीं है फिर भी जिन पवित्र आत्माओं के अंतर्मन में जगत के सभी जीवों के आत्म कल्याण की शुभ भावना पैदा होती है वे विशिष्ट आत्माएं तीर्थंकर नाम का पुण्यबंध करती है। अब तक प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव से महावीर स्वामी तक के काल में असंख्य आत्माएं मोक्ष को प्राप्त हुई हैं। परंतु तीर्थंकर बनकर मोक्ष में जाने का सद्भाव मात्र 24 पुण्यात्माओं को ही प्राप्त हुआ है। मनुष्य से दो प्रकार की कर्म होती है। पुण्य कर्म और पाप कर्म। पुण्य कर्म करने वाले को पुण्य कर्म का फल मिलता है। पाप कर्म करने वाले को पाप कर्म का फल मिलता है।

तंबाकू उत्पादों की होली जलाई

जयपुर. शाबाश इंडिया

विश्व तंबाकू दिवस के अवसर पर राजस्थान जन मंच के आह्वान पर बुधवार को मालवीय नगर के पिकॉक गार्डन के पास हुए कार्यक्रम में तंबाकू उत्पादों की होली जलाई और तंबाकू उत्पादों का सेवन नहीं करने की शपथ ली। संयोजक कमल लोचन ने बताया कि इस मौके पर जयपुर कैंसर रिलीफ सोसायटी के सुधींद्र गेमावत, सुभाष मोटवानी ने उपस्थित आमजन को तंबाकू के उत्पादों से होने वाली हानियों के बारे में बताया। इस दौरान राजस्थान जन मंच युवा टीम के पदाधिकारी अमोलक बैरवा और सौम्यता लोचन के संयोजन में राष्ट्रीय सेवा योजना के डॉ.कीर्ति रावत ने सभी को तंबाकू उत्पाद छोड़ने की शपथ दिलवाई,साथ ही राजस्थान जन मंच के डॉ. अनिल कुमार व पिकी चावरिया ने नशा छोड़ने और पोष्टिक आहार के महत्व के बारे में जानकारियां दी। कार्यक्रम के दौरान गुटखा, सिगरेट,जर्दा,बीड़ी छोड़ने वालों का महासचिव कमल लोचन सभी का मुंह मीठा कराकर स्वागत किया और सभी से इस विनाशकारी समस्या से बचने का आह्वान किया।

पावन धाम में नौ दिवसीय अपूर्व धर्मोत्सव का हुआ समापन

श्रीहरि हरात्मक महायज्ञ के पूर्णाहुति पर उमड़ा श्रद्धा का सैलाब, एक लाख श्रद्धालुओं ने पाई पंगत प्रसादी

विराट नगर. शाबाश इंडिया। पौराणिक तीर्थ स्थल एवं क्षेत्रवासियों की श्रद्धा और आस्था का केंद्र श्री पंच खंडपीठ पावन धाम में पंच खंड पीठाधीश्वर आचार्य स्वामी सोमेंद्र महाराज के सानिध्य में चल रहे नौ दिवसीय अपूर्व धर्मोत्सव तथा अष्टोत्तर शत कुंडिया श्री हरि हरात्मक महायज्ञ पूर्णाहुति के साथ शुक्रवार को संपन्न हुआ। इस अवसर पर टोरडा धाम से पधारे मंगल दास महाराज ने यजमानों व श्रद्धालुओं को आशीर्वाद दीया। नौ दिवसीय अपूर्व धर्मोत्सव के दौरान श्री राम कथा, रासलीला, सहित विभिन्न मूर्तियों की प्रतिष्ठा कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

गीष्मकालीन धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर का समापन समारोह संपन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल एवं सांगानेर संभाग के अंतर्गत श्योपुर इकाई द्वारा गीष्मकालीन धार्मिक संस्कार शिक्षण शिविर का समापन समारोह सानंद संपन्न हुआ। यह समारोह कैलाश चंद जैन मलैया की अध्यक्षता में हुआ। मंगलाचरण सुश्री मनन्या बिलाला द्वारा प्रस्तुत कर कार्यक्रम शुभारम्भ हुआ। चित्र अनावरण कर्ता रमेश सरोज काला ने किया। द्वीप प्रज्ज्वलन कर्ता प्रदीप निशा पांडया रहे। इस अवसर पर श्योपुर इकाई के अध्यक्ष राजेश कुमार पांड्या ने बताया कि इस शिविर में 105 शिविरार्थियों ने रजिस्ट्रेशन करवाया और 81 ने बड़े उत्साहित होकर लिखित परीक्षा में भाग लिया। प्रवेशिका में अर्थ जैन ने प्रथम और सुविज्ञा जैन द्वितीय रही।, भाग एक में दैविक ने प्रथम और स्वरा जैन द्वितीय रही।, भाग द्वितीय में भवि प्रथम और आरवी पाटनी द्वितीय रही, भाग तृतीय में वत्सल पाटनी प्रथम और तोयश द्वितीय रहे, भक्तामर में श्रीमती गुंजन जैन ने प्रथम और श्रीमती इला जैन द्वितीय रही। इस प्रकार कुल पांच कक्षाओं के शिविरार्थियों ने संस्कार एवं धार्मिक ज्ञानार्जन किया। सागानेर संभाग के उपाध्यक्ष अशोक कुमार पापड़ीवाल ने बताया कि इस शिविर में बच्चों से लेकर 80 बर्ष तक के शिविरार्थियों ने भाग लिया यह बहुत ही सराहनीय कार्य हुआ है। कैलाश चंद मलैया सांगानेर संभाग के अध्यक्ष एवं शिविर संयोजक के रूप में बोलते हुए बताया कि सभी शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र और पुरस्कार प्रदान करके पुण्यार्जकों ने ज्ञान दान करके धर्म लाभ प्राप्त किया, साथ ही अपना समाज का पैसा समाज में ही गया। दूसरे नंबर पर इस शिविर में शिक्षण कार्य करने वाली शिक्षिकाओं ने भी ज्ञान यज्ञ में दस दिवसों तक आहुति दी। तत संबंधित पुण्यार्जन किया। जिनमें क्रमशः श्रीमती ज्योति जैन (प्रवेशिका), श्रीमती सुशीला विंदायका(भाग प्रथम), श्रीमती बीना पाटनी (भाग द्वितीय), श्रीमती सुशीला जैन (भाग तृतीय), श्रीमती सुशीला पांडया (भक्तामर) ने अपनी शक्ति अनुसार शिविरार्थियों को बखूबी संस्कारित किया। इस अवसर पर मंदिर कमेटी के अध्यक्ष बाबूलाल पाटनी अपनी कार्यकारिणी सहित कार्यक्रम की शोभा बड़ा रहे थे और श्योपुर इकाई के समस्त पदाधिकारियों ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ी। इस कार्यक्रम का सफल संचालन राकेश कुमार पाटनी ने किया। शिविर में प्रतिदिन पुण्यार्जकों द्वारा शीतल पेय एवं गिफ्ट दी गई। अंत में चेतन निमोडिया ने सभी शिविरार्थियों एवं समाज के आबाल बृद्धों और आगन्तुक महानुभावों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि ऐसे शिविर आज जैन समाज के लिए वरदान सिद्ध हो रहे। हमारी समाज को यदि धार्मिक संस्कार नहीं दिए गए तो जो परिणाम आज सामने आ रहे , इससे भी बुरा परिणाम भविष्य में होगा। अतः महासमिति वालों का और अभिभावकों का विशेष आभारी हूँ।

गोयल अध्यक्ष, शर्मा सचिव गर्ग कोषाध्यक्ष चुने गए

अनिल पाटनी. शाबाश इंडिया

अजमेर। लायन क्लब अजमेर पृथ्वीराज की सत्र 2023-24 के लिए नई कार्यकारिणी की घोषणा वैशालीनगर स्थित होटल क्रेजी टेल में अयोजित साधारण सभा में नॉमिनेशन कमेटी के चेयरमैन लायन पारस लालवानी, सदस्य लायन रमेश लखोटिया, लायन नीरज दोसी द्वारा की गई। लायंस मार्केटिंग के डिस्ट्रिक चेयरपर्सन लायन राजेंद्र गांधी ने बताया कि निवर्तमान अध्यक्ष लायन गजेंद्र पंचोली, अध्यक्ष लायन त्रिलोक गोयल, उपाध्यक्ष लायन हनुमान गर्ग, उपाध्यक्ष लायन सुरेंद्र जैन, सचिव लायन सुनील शर्मा, सह सचिव लायन मोहन कुमार गुप्ता, कोषाध्यक्ष लायन विनय गुप्ता, एलसीआई कोडिनेटर लायन अरुण जैन, टेमर लायन रीना बोहरा, क्लब मार्केटिंग चेयरमैन लायन राजेंद्र गाँधी, टेल ट्विस्टर लायन मधु लखोटिया, डायरेक्टर लायन राजेश बोहरा, लायन जीतेन्द्र खंडेलवाल, लायन शशि जैन, लायन सीमा शर्मा, लायन ज्योति दोसी, लायन शशि गोयल, क्लब सर्विस लायन आभा गाँधी, क्लब लीडरशिप चेयरपर्सन लायन नीरज दोसी, क्लब एडमिनिस्ट्रेटर लायन शशि गुप्ता को नियुक्त किया गया हैं। नयनियुक्त क्लब अध्यक्ष लायन त्रिलोक गोयल ने अपने स्वागत उद्बबोधन में कहा कि क्लब को 25 वर्ष होने पर इस साल जोर शोर से सेवा कार्य किए जायेंगे ।सिल्वर जुबली कार्यक्रम के तहत हर वंचित तक पहुंचने के साथ साथ सामाजिक सरोकार के कार्य भी किए जायेंगे। नई कार्यकारिणी को माला पहना कर स्वागत किया।

आचार्य संघ के भव्य नगर प्रवेश पर जन समूह उमड़ा

भव्य आगवानी में भक्तो ने उतारी आरती

अशोक नगर. शाबाश इंडिया

आचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज ससंघ आठारह साधुओ के साथ भव्य नगर प्रवेश किया आज प्रातः काल से ही भक्तों का समूह मुनि संघ की अगवानी करने तूमैन रोड़ की ओर दौड़ रहे थे । नगर के बाहर पहुंच कर समाज के अध्यक्ष राकेश कासंल, महामंत्री राकेश अमरोद, सुनील अखाई, थूवोनजी कमेटी के अध्यक्ष अशोक जैन टींगू, महामंत्री विपिन सिंघाई, मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा, उमेश सिघई जैन, युवा वर्ग अरिहंत ग्रुप के साथियों ने मुनि संघ के चरणों में नमन अर्पित कर नगर प्रवेश का निवेदन किया। नगर के बाहर से ही भव्य शोभायात्रा के रूप में भव्य मंगल प्रवेश कराया गया। इस भव्य शोभायात्रा में बैन्ड बाजे, इसके बाद जैन युवा वर्ग के साथी अरिहंत ग्रुप जैन जाग्रति मंडल जैन मिलन सहित तमाम युवाओ के दल के सदस्य अहिंसा धर्म की जय भगवान महावीर स्वामी के जय करो से गूंज रहा था। यहां भव्य जुलूस शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए सुभाष गंज मैदान में आकर धर्म सभा में बदल गया जहां आचार्य श्री के चित्र का अनावरण विधायक जजपाल सिंह जज्जी, समाज के अध्यक्ष राकेश कासंल, महामंत्री राकेश अमरोद, सुनील अखाई ने किया वहीं दीप प्रज्जवलन थूवोनजी अध्यक्ष अशोक जैन टींगू, महामंत्री विपिन सिंघाई, नपा अध्यक्ष नीरज मनोरिया, राकेश जैन इन्दौर के साथ अन्य अतिथियों द्वारा किया गया।

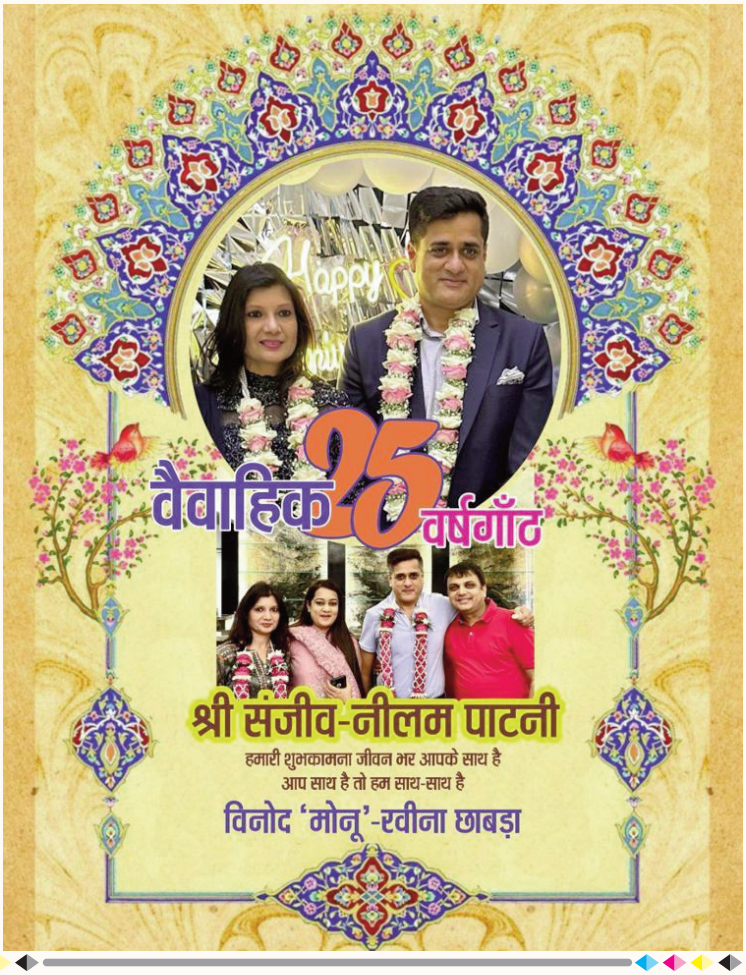

दस दिवसीय श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर का हुआ शुभारंभ

विमल जोला. शाबाश इंडिया

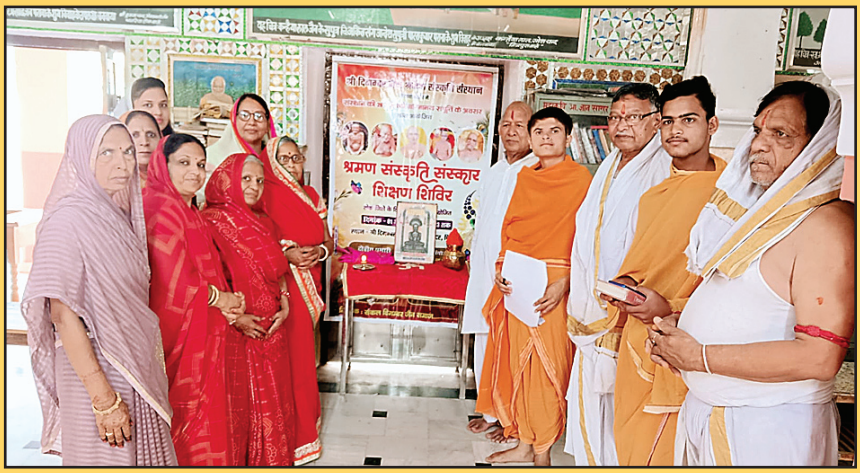

निवाई। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में दिनांक 1 जून 2023 से 10 जून 2023 तक चलने वाले श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर संपूर्ण टोंक जिले के निवाई सहित 21 स्थानों पर शुभारंभ किया गया जिसमे नवोदित विद्वानों द्वारा शिक्षण कार्य एवम नैतिक शिक्षा संबंधी संस्कारों का शंखनाद किया गया। जैन समाज के प्रवक्ता विमल जौंला ने बताया कि गुरुवार को समाज के गणमान्य महानुभावों द्वारा ध्वजारोहण मंगल कलश स्थापन के साथ दीप प्रज्वलन किया गया। शिविर के शुभारंभ पर आगंतुक विद्वानों द्वारा संपूर्ण 10 दिनों के कार्यक्रम का विवरण प्रस्तुत किया गया। शिविर को लेकर शहर के नसियां जैन मंदिर बडा.जैन मंदिर एवं अग्रवाल जैन मंदिर मे विद्वान सुरेश कुमार शास्त्री अरिहंत जैन शास्त्री पथरिया एवं रोविल जैन शास्त्री हरदी की अगुवाई में शिविर के बेनर का विमोचन कर उद्घाटन किया गया जिसमें जैन समाज के मंत्री महावीर प्रसाद पराणा धर्मचंद चंवरिया निर्मल जैन सहित अनेक लोगों द्वारा विमोचन किया। जौंला ने बताया कि बालक बालिकाएं महिलाओ एवम पुरुष वर्ग सभी उम्र के श्रावक और श्राविका इस शिविर से लाभान्वित होंगे। बच्चो को बदलते हुए परिवेश में अपने जीवन की इस यात्रा को कैसे नैतिकता एवम संस्कारों के साथ कैसे आगे बढ़ाए सांगानेर स्थित श्रमण संस्कृति संस्थान के 26 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में यह शिविर संपूर्ण भारत वर्ष में आयोजित किए जा रहे है इस आयोजन को आचार्य विद्यासागर जी महाराज के मंगल आशीष एवम मुनि पुंगव श्री सुधा सागर महाराज की मंगल प्रेरणा प्राप्त है। जौंला ने बताया कि प्रातः काल ध्यान योग एवम सुप्रभात स्तोत्र, अभिषेक विधि बालबोध भाग 1 व 2 की कक्षाएं मध्यान्ह काल में तत्वार्थ सूत्र द्रव्य संग्रह, छहढाला सांय काल आरती शिक्षण कार्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्मिलित है।

रिद्धि सिद्धि नगर कोटा में हुई श्री जिनसहस्त्रनाम आराधना

कोटा. शाबाश इंडिया

प. पू. भारत गौरव श्रमणी गणिनी आर्यिका रत्न 105 विज्ञाश्री माताजी के ससंघ सान्निध्य में श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर रिद्धि सिद्धि नगर कोटा में श्री जिनसहस्त्रनाम की आराधना निर्विघ्न संपन्न हुई। सभी भक्तों ने भक्ति में ओत प्रोत होकर भक्ति रस का भरपूर आनंद लिया। पूज्य माताजी ने कहा कि यदि श्रद्धा भक्ति के भाव से इस आराधना को किया जाये तो यह भक्ति तात्कालिक फल को प्रदान करने वाली है। कहते हैं भावना भक्त को भगवान बना देती हैं। जितनी प्रशस्त भावनायें रहती है उतने ही प्रशस्त आपकी क्रियायें होती हैं। माताजी ने कहा वर्तमान समय में सभी की मिथ्यात्व की बुद्धि बन गई हैं। आज के समय में इंसान स्वयं धर्म कार्य नहीं करता और जो दूसरे करते हैं उन्हें भी नहीं करने देता। मिथ्या भ्रांति फैलाकर धर्म कार्य में विघ्न डालता है। ऐसे लोगों से दूर रहना चाहिए जो देव शास्त्र गुरू की सेवा में रोक लगाये। देव शास्त्र गुरू की निंदा करने, सेवा में विघ्न डालने से निधत्ति निःकांक्षित जैसे कर्म बंधते हैं। अंजना सती ने जलन - ईर्ष्या से 22 घड़ी के लिए जिन प्रतिमा को छिपा दिया था तो उसे 22 वर्ष तक पति का वियोग सहना पड़ा जबकि उसने प्रायश्चित किया, आर्यिका पद ग्रहण करके 1 माह तक मासोपवास किये फिर भी देव शास्त्र गुरू की निंदा का फल भोगना पड़ा।

जिस तरह से हम खीरे को खाते हैं, लोकी को क्यों नहीं खाते?

खीरे और लौकी दोनों ही सब्जियां हैं, लेकिन इनकी गुणवत्ता और उपयोग में थोड़ा अंतर होता है। खीरे को ताजा या पका हुआ रूप में खाया जा सकता है, जबकि लौकी को उबालकर ही खाना जाता है। इसके पीछे कुछ कारण हैं...

रसायनिक संरचना: लौकी में एक रसायनिक घटक होता है जिसे 'लौकीसिन' कहा जाता है। यह घटक शाकाहारी लोगों के लिए अवश्यक है लेकिन रसायनिक तत्व के कारण यह कच्चा खाने के लिए असुरक्षित हो सकता है। इसलिए लौकी को उबालकर ही सेवन किया जाता है जिससे यह सुरक्षित और पाचनीय हो जाती है।

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान विधानसभा,जयपुर।

पाचन क्षमता: लौकी को पकाने से उसकी पाचन क्षमता बढ़ जाती है और यह आसानी से पच जाती है। खीरे को कच्चा खाने के लिए अपेक्षाकृत पाचन क्षमता ज्यादा होनी चाहिए, जो सभी लोगों के लिए समान नहीं होती है।

रुचि और स्वाद: खीरे को कच्चा खाने की रुचि और स्वाद कुछ लोगों को पसंद होता है, जबकि लौकी का कच्चा स्वाद थोड़ा मीठा और विलयनशील होता है जो बहुत सभी को पसंद नहीं आता है। लौकी को उबालकर खाने से इसका स्वाद और मेहनत पूर्ण हो जाता है।

पाचन गुणवत्ता: खीरे को कच्चा खाने के बावजूद उसमें अपार पाचन गुणवत्ता होती है, जिसके कारण यह आंतों को स्वच्छ रखने में मदद करता है, हाइड्रेशन करता है और पेट संबंधी समस्याओं को कम करता है। इसलिए, खीरे और लौकी में उबालने और पकाने की विशेषता है, जिसे दरअसल यह सुनिश्चित करता है कि वे सेवन के लिए सुरक्षित, पाचनीय और स्वादिष्ट हो जाते हैं।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com